गैर-सरकारी सदस्यों के एक संकल्प में सरकार से आग्रह किया गया कि एक राष्ट्रीय आवास नीति बनाई जाए। इस संकल्प को वापस लेने से पूर्व सभा के सभी वर्गों ने इसको समर्थन दिया। बाद में राष्ट्रीय आवास नीति सभापटल पर रखी गयी।

सत्र के दौरान 621 तारांकित प्रश्न सूचीबद्ध किए गए। जिनमें से मौखिक रूप से 97 प्रश्नों का ही उत्तर दिया जा सका। इस प्रकार औसतन प्रतिदिन 3 प्रश्नों का उत्तर दिया गया। इसके अलावा दो आधे-घंटे-ही चर्चाएं की गई और 6,229 अतारांकित प्रश्नों के उत्तर दिए गए।

माननीय सदस्यों ने नियम 377 के अधीन 355 मामले उठाए। इसके अलावा शून्य काल के दौरान लगभग 576 सदस्यों ने लोक महत्व के महत्वपूर्ण विषय उठाए।

मैं इस अवसर पर सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने सभा के कार्य को सम्पन्न करने के लिए मुझे तथा सभापति तालिका में शामिल मेरे साथियों को पूरा सहयोग किया। मैं सभा के नेता, विपक्ष के नेता, विभिन्न दलों और ग्रुपों के नेताओं तथा मुख्य सचेतकों और सचेतकों का अत्यन्त आभारी हूं कि उन्होंने मुझे सहयोग दिया। सभी की ओर से मैं प्रेस और मीडिया का धन्यवाद करता हूं कि जिन्होंने पूरा सहयोग दिया और हमारे साथ देर रात्रि तक बैठे। मैं लोकसभा सचिवालय, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग तथा अन्य सम्बद्ध एजेंसियों के अधिकारियों और कर्मचारी गण द्वारा दिए गए सहयोग के लिए उनका धन्यवाद करता हूं।

अब मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि वे अपने विचार रखें।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, संसद का यह सत्र समाप्त होने जा रहा है। सत्र कठिनाइयों से भरा था, लेकिन कठिनाइयों पर विजय पाते हुए, आपके नेतृत्व में हम कुछ महत्वपूर्ण काम करने में सफल हुए हैं। कुछ काम बाकी हैं, जिन्हें भविष्य में करने हैं। भविष्य में हमें यह भी प्रयत्न करना है कि समूचा सदन अच्छी तरह से चले, कोई अप्रिय घटना न हो। लेकिन इस सत्र की विशेषता यह रही कि किसी अप्रिय घटना के बाद इसने तुरन्त अपने को संभाल लिया। यह भारतीय लोकतन्त्र की शक्ति का परिचायक है।

अध्यक्ष महोदय, आपको इसका श्रेय जाता है। आप नाम से ही योगी हैं। आसन पर बैठकर आप जिस तटस्थता का परिचय देते हैं, जिस तरह कभी टाल जाते हैं और कभी अनदेखा कर देते हैं, उसके लिए सचमुच में योग की साधना जरूरी मालूम पड़ती है।

मैं सदन के सभी सदस्यों का आभारी हूं, जिन्होंने सत्र को सफल बनाने में योगदान दिया। सचिवालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति भी हम अपना आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने अथक परिश्रम तथा काम करके, जो भी संसद के तकाजे थे, उन सब को पूरा करने में योगदान दिया।

[अनुवाद]

श्री पी॰ शिव शंकर (तेनाली) : अध्यक्ष महोदय, अपने संसदीय कार्यकाल में हमने एक और मील का पत्थर हासिल कर लिया है। बारहवीं लोक सभा का द्वितीय सत्र आज समाप्त होने जा रहा है। इसमें निसन्देह कुछ पूर्ण स्थिति रही, कुछ समस्याओं से भी जूझना पड़ा। लेकिन हमारी संस्कृति यह रही है कि सभा के संचालन में हमारे मतभेदों से उत्पन्न कोलाहलपूर्ण स्थिति के बावजूद तथा सामने आई समस्याओं के बावजूद हमारा अपना एक उत्कर्ष है, अपनी एक क्षमता है हमारी गतिशीलता ही इस बात में अन्तर्निहत है कि समय आने पर हम एकजुट होकर आगे बढ़ने में कामयाब रहे हैं। यह हमारा अद्भुत गुण है और ऐसा कहकर मैं कोई गलती नहीं करूंगा कि यह हमारी अद्भुत विशेषता भी है, यह हमारी राष्ट्रीय सम्पदा है, जिसे मैं तो कहूंगा कि हम इस सत्र में सभा की कार्यवाही के संचालन में सफलतापूर्वक संजोए हुए हैं।

थोड़ा बहुत काम पूरा किया गया। विपक्ष और सत्ता पक्ष के समक्ष समय-समय पर आने वाली कुछ कठिनाइयों के बावजूद इसमें सफलता मिली। लेकिन यह तथ्य सही है कि हमने सभी महत्वपूर्ण विषयों, जिसका आपने ब्यौरा दे दिया है और जिन पर चर्चा किये जाने की आवश्यकता भी थी, पर चर्चा की।

मैं विशेषकर इस बात के लिए पूरे सदन का आभारी हूं कि हमने एक अत्यन्त मार्मिक और भावनात्मक मुद्दे पर दलगत भावना से ऊपर उठकर चर्चा की हैं। हालांकि चर्चा के दौरान थोड़े बहुत मतभेद उभरकर सामने आये फिर भी हम दलगत भावना से ऊपर उठकर इस पर चर्चा करने में कामयाब रहे। यह हमारे प्रतिनिधित्व का प्रतिबिम्ब है और मेरी राय में यह सौगात हमें न केवल विगत कुछ वर्षों में बल्कि संसदीय कार्यकाल में, विरासत में मिली है और ऐसा कहकर मैं कोई गलती नहीं करूंगा कि अब इस स्थिति में भी परिपक्वता आ गई है।

महोदय, सच्ची बात तो यह है कि जब आप इस पद पर आसीन हुए थे तो हमें कुछ चिन्ता हुई, विशेषकर आन्ध्र प्रदेश के लोग काफी चिन्तित थे। लेकिन मैं तो बिना किसी अतिश्यायोक्ति के विनम्र शब्दों में यह कहना चाहूंगा कि आपने अपने कर्तव्यों का निर्वहन इतनी बखूबी से किया है कि हम लोगों, विशेषकर आंध्र प्रदेश के लोगों का सिर फक्र से ऊंचा उठ गया है।

अपराह्न 3.00 बजे

राष्ट्र को आप पर गर्व है और मुझे विश्वास है कि संसद के इतिहास में आपका नाम इस सभा के सर्वोत्कृष्ट अध्यक्षों की पंक्ति में लिखा जाएगा।

महोदय, मैं प्रधान मंत्री और उनके सहयोगी मंत्रियों की भी इस बात के लिए प्रशंसा करता हूं कि उनके साथ हमारे समक्ष आयी थोड़ी बहुत समस्याओं के बावजूद, मैं तो कहूंगा कि उन्होंने हमेशा सामान्य दलगत स्तर से ऊपर उठने का प्रयास किया है। उन्होंने यह सुनिश्चित करने में कि सभा की कार्यवाही सुचारू रूप से चले हमारी और सभा